## शोध आलेख

# बुंदेलखंड की आर्थिक प्रगति एवं महामती प्राणनाथ (17वीं सदी)

## शोध सार:-

मध्यकालीन भारत में विशेषकर मुगल साम्राज्य के समय जब हम क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन करते हैं तो उसमें एक नाम **बुंदेलखंड** का भी आता है। बुंदेलखंड के राजवंशों के इतिहास का अध्ययन करते समय, जिसमें हम महाराज छत्रसाल का नाम सबसे पहले सुनते हैं, जिन्होंने मुगल शासक औरंगजेब के साथ कई लड़ाइयां लड़ी। जिसमें कभी सन्धि प्रस्ताव से बात सुलझ गयी तो कभी विजयीपताका लहराई। छत्रसाल के समय से ही बुंदेलखंड अपने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सबसे ज्यादा गौरवशाली दिनों के रुप में उभर कर सामने आया था और उनकी मृत्यु के बाद वह एक स्वतंत्र प्रांत के रूप में विकसित हुआ। परंतु छत्रसाल के राजनीतिक जीवन, उनकी आर्थिक शक्ति के पीछे किसका हाथ था यह हमें नहीं पता चलता है। ऐतिहासिक पुस्तकों में जिस तरह से शिवाजी के साथ उनके गुरू **समर्थ रामदास** के नाम का जिक्र मिलता है उसी तरह छत्रसाल के राजनीतिक और आर्थिक सामाजिक जीवन के पीछे उनके जिस गुरु, उनके पथ-प्रदर्शक **महामती प्राणनाथ** का योगदान सबसे ज्यादा था उनका नाम इतिहास के पन्नों में नहीं मिलता जबकि छत्रसाल का नाम हमें ऐतिहासिक पुस्तकों में मिलता है। प्राणनाथ **(प्रणामी सम्प्रदाय के संत कवि)** ने बुंदेलखंड की धरती पर आकर अपना आर्थिक योगदान किस प्रकार दिया, जिससे छत्रसाल ने एक विशाल सेना तैयार की। साथ ही एक विशाल जन समुदाय भी आकर उनसे जुड़ा। कैसे हीरे की खोज से बुंदेलखंडियों को एक नया आर्थिक आधार मिला। प्राणनाथ का इन सब घटनाओं उन किवदंतियों में छिपी ऐतिहासिकता उसकी महत्ता, किये गये योगदान को जानने समझने का एक छोटा सा प्रयास है इस लेख के माध्यम से।

**बीज शब्द- जेजाकभुक्ति, चेदि, विंध्यभूमि, खगार राजवंश, चंदेल राजवंश, बुंदेल राजवंश, चौथ कर, पुरातत्वविदों, कुमुक, किवदंती, बीतक, आलोचनात्मक संवेदनशीलता, संधा-भाषा, प्रणामी संप्रदाय।**

## मूल आलेखः

16वीं 17वीं शताब्दी का बुंदेलखंड मतलब चंदेल साम्राज्य के पतन के बाद बचा हुआ 'जेजाकभुक्ति' राज्य। प्राचीन समय में यानी की पौराणिक काल में यह 'चेदि' जनपद के नाम से भी प्रसिद्ध था। चूंकि यह विंध्य की ऊंची पर्वत श्रेणियां से घिरा है इसी कारण इसका एक नाम 'विंध्यभूमि' भी है यहां पर जिन दो बड़े राजवंशों ने शासन किया उसमें प्रथम राजवंश **चंदेल राजवंश - 1851 से 1182 ई.सन तक।** बीच में कुछ समय तक **खगार राजवंश- 1182 से 1346 ई सन तक** इसके बाद **दिल्ली सल्तनत के अधीन 1346 से 1501 ई.सन** तक। फिर आता है **बुंदेल राजवंश 1501 से 1950 तक** जिसमें मुगल शासको के साथ कई लड़ाइयां होती हैं और अंत में महाराजा छत्रसाल की मृत्यु के बाद एक स्वतंत्र प्रांत के रूप में बुंदेलखंड स्थापित होता है।

बुंदेलखंड के शासक केंद्रीय राजसत्ता के साथ कभी संघर्ष तो कभी मैत्रीपूर्ण अपने राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने में लगे रहते ही थे परंतु जब यही विद्रोह अपने ही क्षेत्र से उठने लगे अपने ही लोगों का रवैया स्वयं के खिलाफ होने लगे तब राजसत्ता हो या परिवारसत्ता डावांडोल हो ही जाती है यही हालत बुंदेलखंड की थी पड़ोस की शक्तियों को वह नियंत्रण करने में तो लगे ही थे, दूसरी ओर बुंदेलखंड के छिटपुट राजाओं की शक्तियों को, उनकी बढ़ती महत्वाकांक्षाओं को रोकने का भार भी बुन्देल राजाओं पर था। आये दिन वह आपस में ही युद्धरत, संघर्षरत होने लगे। ऐसे में स्थिति और भी गंभीर हो गई यह स्थिति चंपतराय से लेकर छत्रसाल के बाद तक रही। इतिहासकार **हरिश्चंद्र वर्मा** की पुस्तक में छपे लेख के अनुसार ,

**"इस संघर्ष में मुगलों के पास उनके सारे साम्राज्य की शक्ति एक इशारे पर हाजिर थीं जबकि छत्रसाल बुंदेलखंड के भी सिर्फ एक हिस्से और वह भी अधिकांशत 'अन'उपजाऊ हिस्से पर अधिकार रखता था। इसके साथ ही दतिया, ओरछा, और चंदेरी के राजाओं के शतुत्रापूर्ण रुख पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए"(1)**

बुंदेलखंड की भूमि उत्तर के मैदानी भागों की भांति उपजाऊ नहीं थी कि हर साल वहां पर खेती करके जनता अपना पेट पाल सके। ना ही व्यापार इतना हो रहा था जिसके जरिए वहां आर्थिक उन्नति हो सके। पहाड़ी इलाका, अन उपजाऊ भूमि, जल स्रोतों की कमी आदि बाधक कारकों कें होने से वहां की आर्थिक प्रगति बहुत नाम मात्र की थी। उसपर केन्द्र सत्ता द्वारा भारी चौथकरों की मांग समय से, नहीं तो फिर जबरन वसूली और युद्ध। इन सबसे ना चाहते हुए भी वहां की राजशक्तियों के साथ-साथ आमसाधारण जनता भी लूटमार, छापेमारे, युद्ध जैसी गतिविधियों में जीत हासिल करके मिले धन से अपनी आजीविका चलाने में लगे थे। कभी पेट की भूख तो

कभी भविष्य के प्रति बढ़ती चिंताओं, जीवन की कठिनाइयों के कारणों से ही वहां की जनता, वहां के किसान, व्यापारीवर्गों में साथ ही बढ़ती राजशक्तियों में फूट पड़ी थी। दैनंदिन अलगाव ही बढ़ता रहता था। जैसा शासक होता था जनता भी उसी तरह का रुख अपनाती थी। हर किसी को अपने जीवन, अपने भविष्य की पड़ी थी। देश प्रेम की भावना बहुत कम थी। पेट भर जाये वहीं बहुत था। ऐसे में जिस एक व्यक्ति का आगमन बुंदेलखंड की धरती पर हुआ जिसने न केवल वहां की आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया, आर्थिक योगदान दिया, बल्कि आम जनता, और वहां के सत्ता शासकों के प्रति व्याप्त अलगाव को दूर कर उनमें एकजुटता का मार्ग प्रशस्त किया।

**छत्रसाल के दरबारी कवि लालकवि** लिखतें हैं-

**“आठ हजार डांड जब मान्यौ , उतरायो साहकुले मुख पान्यौ ।।**

**चौथ सिवाय दई मुंहमांगी, सूबन के उर दहशत जागी ।।**

**कौंच लौचि कीनै मन भाये, मऊ आई निसान बजाए ।।**

**त्यौहीं प्राणनाथ प्रभु आए, दिल के कुल संदेह मिटाए” (2)।।**

प्राणनाथ ने यह मार्ग केवल जनता और शासक के मध्य ही नहीं प्रशस्त किया था बल्कि यह मार्ग जनता और जनता के मध्य, धर्म और राज्य के मध्य, केन्द्रसत्ता और क्षेत्रीयसत्ता के मध्य, आर्थिक वैचारिकी और धर्म की वैचारिकी के मध्य एक पुल बनाने का कार्य किया था। मेहराज ठाकुर (प्राणनाथ ) ने पन्ना की धरती पर जाकर किसानों, व्यापारियों, शासको के मध्य, राज्य की शक्तियों के मध्य मजबूती हेतु एवं आर्थिक उन्नति हेतु सहयोग की भावना पैदा की थी। **भगवान दास गुप्त** लिखतें हैं-

**“ छत्रसाल और स्वामी प्राणनाथ के संबंध शिवाजी और समर्थ गुरु रामदास जैसे ही थे। प्राणनाथ ने छत्रसाल को नैतिक और आध्यात्मिक बल देकर उनके राजनीतिक उद्देश्यों का महत्व बुंदेलखंडियों की दृष्टि में बहुत बढ़ा दिया। शिवाजी पर स्वामी रामदास का प्रभाव तो राजनीतिक की अपेक्षा आध्यात्मिक ही अधिक था परंतु प्राणनाथ राजनीतिक क्षेत्र में भी छत्रसाल के बहुत बड़े सहायक सिद्ध हुए। उन्होंने बुंदेलखंड में औरंगजेब की हिंदू विरोधी प्रतिक्रियावादी नीति की अपने उपदेशों में स्पष्ट रूप से कठोर निंदा कर छत्रसाल के पक्ष में सुदृढ़ जनमत का निर्माण किया और जनता को उनकी स्वतंत्रता संग्राम में पूर्ण योगदान देने को सफलतापूर्वक उकसाया”(3)**

व्यापार आर्थिक उन्नति में कितना सहायक है यह प्राणनाथ भली भांति जानते थे। साथ ही यह भी जानते थे की लूटमार जैसी गतिविधियों से राज्य में आर्थिक स्थायित्व नहीं आ सकता। उसके लिए कोई ऐसा साधन चाहिए था जो राज्य की सीमा के भीतर ही हो और वह अन्य राज्यों की सीमाओं को भी पर जा सके ताकि जो लाभ हो बुंदेलखंड की जनता और शासन को हो उससे एक नई कुमुक तैयार हो सके और राजकोष में भी बढ़ोतरी होती रहे और राजनीतिक स्थिरता भी आ सके। **हरिश्चंद्र वर्मा में लिखे लेख के अनुसार-**

**"वह क्षेत्र जिसमें छत्रसाल का राज्य था किसानों को बहुत कम आकर्षित करता था। तथा वहां की राजनीतिक अस्थिरता के कारण भी वातावरण व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए समुचित नहीं था। इसीलिए अधिकांश लोगों ने लूट और खजानों के माल में हिस्सा बांटने के लिए छत्रसाल का साथ दिया। वे बड़ी संख्या में बुंदेली सेना में भर्ती हुए और लूट के माल में हिस्से की आशा में प्रायः वे कम वेतन पर भी तैयार हो गए। यही कारण था कि छत्रसाल इतनी बड़ी सेना आसानी से संगठित कर सका"(4)**

किसी स्थान पर पुरातन सामग्री के अवशेष हैं या नहीं इस तरह की अनुमानित पद्धति, अनुमानिक बोध केवल उसके जानकार पुरातत्वविदों को ही पता रहता है। बिल्कुल ठीक ठीक भले ही ना सही लेकिन अंदाजा रहता है। ठीक उसी प्रकार व्यापारिक बोध व आर्थिक चीजों का ज्ञान भी किसी दूसरी व्यापारिक भूमि पर रहते-रहते, साथ ही आर्थिक भार संभालते-संभालते, क्षेत्रीय और समुद्री यात्राओं को करते-करते उस बौद्धिक व्यक्ति को भी हो जाता है जो इन गतिविधियों से दैनंदिन जुड़ा हुआ है। पुरातत्वविदों की भांति ही वह बौद्धिक व्यक्ति भी व्यापारिक भूमि को समझ सकता है अंदाजा लगा सकता है । यही बौद्धिकता और खोजी प्रवृत्ति प्राणनाथ में भी थी।

मध्य भारत की ऊबड़-खाबड़ भूमि उस पर विंध्य पहाड़ियों की ग्रेनाइट चट्टानें बहुत कुछ इशारा कर रही थी उसके अंतस में छिपे खजाने की ओर। प्राणनाथ ने अपने इसी अनुमानित ज्ञान का परीक्षण किया और अपने ज्ञान के चलते उस खजाने की खोज की थी। जिसने बुंदेलखंड की दिशा दशा दोनों बदल कर रख दिया था। बुन्देलखण्ड की धरती से हीरे के रूप में मिले खजाने ने बुन्देलखण्ड के वासियों की आर्थिक विपन्नता को सम्पन्नता में बदलकर रख दिया था।

**किवदंती** कहती है- कि जब बुंदेलखंड के महाराजा छत्रसाल आर्थिक विपन्नता से जूझ रहे थे। तब प्राणनाथ ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि जहां-जहां तुम्हारा घोड़ा दौड़ेगा वहां वहां तक हीरे की उपलब्धि होगी। महाराजा छत्रसाल ने उनकी आज्ञा का पालन कर वैसा ही किया और माना जाता है तभी से बुंदेलखंड की धरती

से हीरा मिलना शुरू हो गया। विशेष कर आज का मध्य प्रदेश का क्षेत्र 'पन्ना' हीरे के लिए ही जाना जाता है। मध्य प्रदेश के आर्थिक उन्नति की जब भी बात आती है तो हीरा सबसे ऊपर आता है। '**पन्ना**' यानी **"हीरे का क्षेत्र"।**

छत्रसाल के दरबारी कवि **लालकवि** लिखते हैं **'छत्रप्रकाश'** में इस किवदंती को-

**"जनश्रुति है कि छत्रसाल जी ने महात्मा से निवेदन किया कि मेरे पास इतना कोष नहीं है कि मैं दिल्लीश्वर की सेना के विरुद्ध रण रोकने को सेना एकत्र करूं। उस समय महात्मा ने छत्रसाल जी को आशीर्वाद दिया और वे उन्हें अपने साथ पन्ने की ओर लिवा ले गए और कहा की तुम अपने घोड़े पर चढ़कर आज दिन भर घूम आवो जितनी दूर तुम घूम आवोगे, उतनी दूर में "हीरा" पैदा हो जाएगा। महाराज ने ऐसा ही किया और कहा जाता है कि उसी समय से महात्मा के आशीर्वाद से वहां हीरा पैदा हो गया। वास्तव में ऐसा जान पड़ता है कि महात्मा ने उस भूमि को देखकर अनुमान कर लिया था कि यह भूमि हीरे की खानों से भरी हुई है और यह बात महाराजा छत्रसाल को बता दी। उसी समय से वहां से हीरा निकाला जाने लगा और उसी हीरे की प्राप्त आय से महाराज छत्रसाल ने एक वृहद कोष एकत्रित किया और उसी कोष के बल पर एक बड़ी सी सेना औरंगजेब के विरुद्ध प्रस्तुत की"(5)**

हीरे का राजकोष में शामिल होने तक ही यह कहानी नहीं रुकी। हीरे से राजकोष की सुदृढ़ता से सैन्य शक्ति का विस्तार हुआ। जिसने छत्रसाल को राजनीतिक गतिविधियों के प्रति और सक्रिय कर दिया। साथ ही वहां के जनसाधारण को एक साथ लाने का प्रयास भी संभव हो सका। व्यापार की तरह खेती की ओर उनका रुझान आकर्षित किया गया। अब लूटमार जैसी गतिविधियों से उन्हें बाहर निकाल कर एक बहुत बड़े व्यापारी वर्ग में उनको शामिल किया गया। स्वयं प्राणनाथ के सुंदरसाथ में ही एक बड़ा तबका व्यापारियों का शामिल था । और वह विशेष कर हीरो के ही व्यापारी थे। जब प्राणनाथ पन्नाधाम में थे। और माना जाता है कि आज भी सम्प्रदाय के साथ साथ वहां के अन्य समुदायों के लोग भी हीरे के व्यापार से जुड़े हुए हैं **लालकवि** लिखतें हैं अपनी पुस्तक में-

**"यह मंदिर धाम के नाम से प्रसिद्ध है यह लोग हीरे का व्यापार करते हैं और हीरे को सान पर चढ़ाते हैं उसके कमल आदि बनाते है।**

**सुना जाता है कि इस मंदिर में एक बहुत बड़ा कोष हीरो का है समृद्धिशील भक्तजन इस मंदिर में उत्सव के समय हीरे भेंट करते हैं"(6)**

पन्ना में ही रहने के दौरान ही लगभग **1683 ईस्वी सन** के आस-पास। पन्ना की आर्थिक स्थिति को देखते हुए प्राणनाथ का एक बड़ा व्यापारी वर्ग जो कि तत्कालीन मेड़ता राजस्थान में व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न था। समस्त सुंदरसाथ के दैनिक आर्थिक जरूरतों की पूर्ति हेतु धन भेजता था। प्राणनाथ शायद नहीं चाहते थे कि उनका और उनके साथ के समस्त सुंदरसाथ का आर्थिक कार्यवहन अकेले छत्रसाल को उठाना पड़े। जिस तरह के हालात थे वहां के और आर्थिक स्थिति। शायद इसी को देखते हुए उन्होंने यह निर्णय लिया। ताकि दैनिक जरूरतों की पूर्ति हेतु बाहरी सीमाओं से धन आता रहे और छत्रसाल का राजकोष सैनिकों के वेतन और आकस्मिक युद्ध के लिए सुरक्षित बचा रहे। यह छत्रसाल की उदारता और अपने गुरु के प्रति भक्ति और प्रेम था कि जब उनको इस बात का पता चला तो वह बहुत दुखी होते हैं कि उनके गुरु ने उनसे ना कह कर अन्य समुदाय और सुंदरसाथ से दैनिक जरूरत हेतु पैसों की आपूर्ति करवा रहे हैं।

**लालदास** लिखते **बीतक** में लिखते हैं –

**“एक बात इत और भाई, सब कुंवर ठाकुरों में।**

**खरच राज की बख्शीश देख के, धोखो भयो मन में।। 33**

**खरच इतसे पोंहोंचे नहीं, ए उठत है कहां से।**

**है इनके पास रसायन, ए सबो जानी मन में।। 34**

**सिवाय एक महाराज के, सबके मन में बस गई।**

**बरस तीन बीत गए, तब लग खरच की खबर ना भई।। 35**

**तब एक दिन महाराज ने, पूछी श्री राज से एह।**

**सबके मन में धोखो है, ए खरच होत है जेह।। 36**

**तब फुरमाई श्री राज ने, ए आवत खरच साथ में से।**

**मेरता को साथ है, सो भेजत है हमें।। 37**

**तब महाराज मन में, बहुत दिलगीर भए।**

**हम ब्रह्मसृष्टि के साथ में, अजूं भए ना सही एक।। 38**

**यह आवत खरच साथ में से, यह सुन भयो दरद।**

**हम कैसे सेवक इनके, हम पर गजब की रही ना हद।। 39**

**तब बोले बलदीवान, ए बात है सहेल।**

**एक जागा मारिए, ताकि चौथ दीजै सब मिल"।।40 (7)**

प्राणनाथ ने बुंदेलखंड की धरती पर एक और महान कार्य किया। वह था वहां की किलकिला नदी के विषाक्त जल को शुद्ध करना। 'जल नहीं तो जीवन नहीं'। उस पर बुंदेलखंड जैसी ठोस पहाड़ी युक्त भूमि में जल स्रोतों का बाहुल्य होना संभव नहीं था और कृषि के साथ-साथ जीवन यापन के लिए जल स्रोतों का होना नितांत आवश्यक है यह बताने की बात नहीं है। कम जल स्रोत, पहाड़ी इलाका, अनुपजाऊ भूमि, उसपर अगर कुछ जल स्रोत हो भी तो उसके प्रति लोगों में कुछ धारणाएं व्याप्त हो कि फलां नदी का, तालाब का जल पीने से प्राणी की मृत्यु हो जाती है चाहे मनुष्य हो चाहे जीवजंतु। फिर तो उस जल से कृषि भी कैसे की जा सकती थी फसले भी विषाक्त हो जाती और विषाक्त अनाज को खाकर वहां के लोगों की मृत्यु। जब प्राणनाथ को इस बात का पता चला जोकि उस समय वह उसी किलकिला नदी के तट पर ठहरे हुए थे जब वह पन्ना आए हुए थे। उन्होंने इस धारणा को तोड़ने के लिए अपने अंगूठे को चरणामृत उसी किलकिला नदी में डाल दिया और फिर वहां मौजूद उनके सुंदरसाथ ने उसी किलकिला नदी में स्नान किया जिससे जल पीने योग्य हो गया और तब से माना जाता है कि उस किलकिला नदी का जल शुद्ध हो गया और नदी वहां की जनमानस के लिए वहां की कृषि के लिए वरदान साबित हुई।

इस **किवदंती** का उल्लेख **लालदास** से लेकर **लालकवि** अपनी पुस्तक में करते हैं। **लालदास** लिखते हैं-

**"सबों ने आए दर्शन करे, कही सुनो सब साध।**

**या नदी को जल न पीजियो, याके पिए जाए प्राण व्याध।।**

**तब सब साथ में मिलके, धोयो चरण अंगूठा राज।**

**डारयो चरणामृत नदी में, पीछे नहायो सकल समाज।।**

**तब सब गोंडों के और लोगों के, दिल में वरती एह।**

**यह तो श्री कृष्ण महाराज, कियो निरमल कालीदह तेह"8।।**

इस किंवदंती में कितनी सच्चाई है कितनी अतिशयोक्ति परन्तु किंवदंतियां किसी भी समय वातावरण, उस देश-काल की परिस्थितियों, घटने वाली घटनाओं के इतिहास को जानने साथ ही जनसमाज तक उसके महत्ता को बताने का एक आधार होती है। संतों के जीवन को, उनके द्वारा किए गए कार्य को सीधे तरीके से ना कह कर उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने का एक तरीका है किंवदंती। उसके पीछे छिपी हकीकत को आधुनिक बनने के चक्कर में पूर्णतय: झूठा नहीं साबित किया जा सकता है। **पुरुषोत्तम अग्रवाल** के शब्दों में-

**"किवदंतियों के आशयों को समझने के लिए जरूरी है की चतुराई, साजिश और बुद्धूपन जैसे 'बीज शब्दों' के व्यामोह से मुक्त होकर, आलोचनात्मक संवेदनशीलता के साथ किवदंतियों को पढ़ा जाए। उनके विकास-संदर्भों को समझा जाए। किंवदंतियों की अपनी भाषा होती है, यथार्थ के साथ संबंध बनाने की, स्मृतियों को सुरक्षित रखने की अपनी विधि होती है। इस विधि को भाषा के यथार्थवादी मुहावरे में ढालने के लिए वैसी ही संवेदनशीलता की जरूरत है जैसे एक भाषा से दूसरी में अनुवाद करते समय जरूरी होती है- स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं के व्याकरण, मुहावरे और परिवेश के प्रति संवेदनशीलता। किंवदंती एक तरह की संधा-भाषा है, जिसमें कुछ तथ्य है, कुछ कल्पना। कुछ घटना है, कुछ व्याख्या। इस संधा-भाषा के धुंधलके में, समाज का सामूहिक अवचेतन ऐतिहासिक स्मृतियों के अर्थ को सुरक्षित रखने का, उनके मर्म को अगली पीढ़ियों तक पहुंचाने का प्रयत्न करता है। किवदंतियों के आकाश में कोई समाज केवल वही नहीं उकेरता, जो है, बल्कि उसे भी उकेरने की कोशिश करता है, जो होना चाहिए और जो हो सकता था लेकिन हो नहीं सका। किवदंतियों की संधा-भाषा इन तीनों- जो है, जो होना चाहिए, और जो हो सकता था- के बीच संवाद की भाषा है"9**

धारणाएं तो आज के समाज में भी खूब फैली हैं मानव समाज है तो धारणाओं का होना भी संभव है। यह बौद्धिक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह जन समुदाय में व्याप्त धारणाओं, मान्यताओं से कैसे बाहर निकाल कर वास्तविक जीवन में जीना सिखाता है। प्राणनाथ जो की दीवान के पद पर थे बहुत सारे धर्म ग्रंथो के जानकार भी थे। साथ राजनीति के पुरोधा भी थे। ज्ञान के अभाव में समाज में व्याप्त धारणाओं का असर मानव मस्तिष्क पर किस प्रकार होता है और किस प्रकार ऐसी धारणाएं घर कर लेती हैं। इससे वह बखूबी परिचित रहे होंगे। ऐसी धारणाओं से लोगों का दैनिक जीवन, उनकी आर्थिकी कितना प्रभावित होती है यह अच्छी तरह से जानते थे। बौद्धिकता की यही निशानी और बौद्धिक व्यक्ति का तब यह परम कर्तव्य और भी हो जाता है कि वह इन मान्यताओं

से, धारणाओं के व्यामोह से जनमानस को मुक्ति दिलाए और एक नई राह दिखाएं जिससे वहां की राजनीतिक विस्तार, आर्थिक उन्नति के साथ, सामाजिक चेतना में विकास हो। और दैनंदिन वह समाज प्रगतिशीलता की ओर बढ़े।

## निष्कर्ष:

प्राणनाथ का बुंदेलखंड की धरती में छत्रसाल के महाराज बनने तक की यात्रा में उतना ही योगदान है जितना शिवाजी के इतिहास को जानने के लिए समर्थ 'रामदास' को पढ़ने की जरूरत है फिर चाहे बुंदेलखंड के क्षेत्र पन्ना में मिलने वाली हीरो की खानों की जानकारी हो, या किलकिला जैसी नदी के विषय में जनमानस में व्याप्त धारणाओं को तोड़ने का प्रयास। बुंदेलखंड की आर्थिक मजबूती हेतु किसानों, व्यापारियों को एकजुट करना या छत्रसाल का प्रभाव स्थापित करवाने के लिए तैयार किया गया जनसंगठन, और छत्रसाल की सैनिक सेवा में शामिल होने के लिए जनसमाज का आवाहन हो। या फिर बात हो कि राजनीतिक सत्ता के दांव-पेंच कैसे खेलें जाते हैं। प्राणनाथ के योगदान को कभी बुलाया नहीं जा सकता। यह अलग बात है कि जिस तरह शिवाजी के साथ ऐतिहासिक पन्नों में समर्थ रामदास को जगह मिली। उस तरह से प्राणनाथ को छत्रसाल के साथ-साथ जगह नहीं मिली। प्रयास है कि अध्ययन करने वाले इतिहास के विद्यार्थी आने वाले समय में महाराज छत्रसाल को जितना जानते हैं उतना ही प्राणनाथ को भी जानेंगे।

## सन्दर्भ संकेत:

1. अशोक कुमार पोद्दार तथा पूजा विज, 'मुगल राज्य का पतन जाट, बुंदेला, सतनामी और सिख विद्रोह', हरिश्चंद्र वर्मा, 'मध्यकालीन भारत' भाग 2 1540 से 1761, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, ई. सन 1993, पृष्ठ संख्या 673.
2. लालकवि, 'छात्र प्रकाश', काशी नागरी प्रचारिणी सभा, ई सन 2016 इंडियन प्रेस इलाहाबाद ई.सन 2016, पृष्ठ संख्या 150.
3. भगवान दास गुप्त, 'महाराज छत्रसाल बुंदेला', शिवलाल अग्रवाल एंड क. प्रा.लि, आगरा, ई. सन 1958, पृष्ठ संख्या 106.

4. अशोक कुमार पोद्दार, पूजा विज, "मुगलराज्य का पतन" जाट बुंदेला सतनामी और सिख विद्रोह, हरिश्चंद्र वर्मा, 'मध्यकालीन भारत' भाग 2 1540 से 1761, हिंदी माध्यम कार्यानव्य निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, ई. सन 1993, पृष्ठ संख्या 674.
5. लालकवि, 'छात्रप्रकाश', काशी नागरी प्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस इलाहाबाद, ई.सन 1016, पृष्ठ संख्या 151.
6. वही पृष्ठ संख्या 152.
7. श्री लालदास, (मानिकलाल दुबे टीकाकार), 'बीतक', श्री प्राणनाथ मिशन, श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर हकीकत नगर दिल्ली, ई सन 2022, पृष्ठ संख्या 146.
8. वही, पृष्ठ संख्या 609.
9. पुरुषोत्तम अग्रवाल, 'अकथ कहानी प्रेम की कबीर की कविता और उनका समय', राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, ई सन 2009, पृष्ठ संख्या 179, 180.

**शोध छात्रा- सुषमा यादव**

**शोध निर्देशक- मृदुला जयसवाल**

**इतिहास विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी**